सामाजिक संस्था संपूर्णा
संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर
(गैर सरकारी संगठन)

"आलेख"

"भाव सुमनांजलि"

क्या समझाएं मन को? कैसे शांत आज रह पाएंगे? अंतर में जो आज उठी है, व्यथा किसे कह पाएंगे?

डॉ शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

आज फिर एक दुर्भाग्यपूर्ण सूचना मिली। हम सबकी प्रिय पूर्व उपमहापौर भारतीय जनता पार्टी की नेत्री *श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी* नहीं रही। मेरी अभी कुछ ही दिन पहले उनसे फोन पर बात हुई थी। वह हंस रही थी और परिवार की कुशल क्षेम पूछ रही थी। पार्टी के लिए पूर्ण रूप से समर्पित , सहृदय व्यक्तित्व की स्वामिनी कई बार मुझसे अपने घर परिवार की विशेषता अपनी पोती का जिक्र किया करती थी। वैसे तो मैं उन्हें बहुत समय से जानती थी। लेकिन जब मैंने उनको हमारी संस्था संपूर्णा के महत्वाकांक्षी दिल्ली स्कूल आदर्श शौचालय मिशन के अंतर्गत एक वार्ड की स्कूल स्वच्छाग्रही बनाया तो मुझे उनकी कर्मठता और कार्यशैली को बहुत पास से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे दिल्ली की एक ऐसी पूर्व उप महापौर थी जो स्कूलों के शौचालयों को देखने में कभी पीछे नहीं हटती थी। मैंने जितनी बार भी उनके क्षेत्र के स्कूलों का निरीक्षण किया। वह हर बार मेरे साथ होती थी।

विश्वास ही नहीं हो रहा है कि आज पूर्णिमा विद्यार्थी जी हमारे बीच में से चली गई हैं। उनका आकस्मिक निधन मन पर बड़ी चोट पहुंचा रहा है। संपूर्णा के प्रत्येक कार्यक्रम में वे हमेशा ही उपस्थित रहती थी। यहां पर मैं संपूर्णा के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से उनकी दिवंगत आत्मा को नमन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वे उस महान आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आजकल जब भी फोन की घंटी बजती है या मैं सोशल मीडिया पर अपने संदेशों को देखती हूं तो मन के अंदर एक अजीब सी घबराहट रहती है। क्योंकि इस कोरोना काल में बहुत सारे हमारे प्रिय, आदरणीय और जान पहचान के व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। कुछ मृत्यु कोरोना से और कुछ अन्य बीमारियों से किंतु मन के अंदर एक गहरा दर्द, एक गहरा रोष और एक गहरा सन्नाटा व्याप्त है। समझ में नहीं आ रहा है कि ईश्वर की इस लीला को मन कैसे स्वीकार करें? यह सत्य है, कि प्रारंभ से ही हमको जीवन और मृत्यु के संस्कार को सिखाया जाता है। परंतु किसी बुजुर्ग के समयानुसार जाने पर मन एक बार फिर भी स्वीकार कर लेता है। किंतु जब अल्पायु में कोई व्यक्ति हमें छोड़ जाता है तो जीवन में सन्नाटा छा जाता है।

आज पंजाब केसरी में छपा आलेख दिल्ली की स्थिति को बयां कर रहा है तो वहीं पूर्णिमा विद्यार्थी का जाना मेरे मन की व्यथा को बयां कर रहा है।

मैं समस्त दिल्लीवासियों से एक भावुक अपील करना चाहती हूं कि हम सब को कोरोना से बचने के लिए सभी नियमों की पालना करनी होगी। बस 30 या 40 दिन और यह महत्वपूर्ण नहीं है। सच में महत्वपूर्ण यह है कि हम सुरक्षित रहें। क्योंकि किसी भी परिवार में एक भी सदस्य का अल्पायु में जाना उस परिवार के लिए पूरे जीवन दु:खों का कारण बन जाता है। आप सुरक्षित रहें।
यहां पर मेरी अपील युवा वर्ग से है। आप युवा हैं। आपका मन घर पर नहीं लगता। आप अपने दोस्तों से मिलना चाहते हैं। लेकिन जरा सोचिए कि आप के बुजुर्ग दादी-दादा या माता-पिता जिन्होंने ना जाने कितनी मंगलकामनाएं करके आपको पाला-पोसा है। हो सकता है कि आप कोविड-19 लड़ ले और जीत जाएं। लेकिन आप के संपर्क में आकर आपके दादा-दादी, माता-पिता संक्रमित हो जाएं तो वह ज्यादा दिन नहीं टिक पाएंगे। प्लीज आप थोड़ा सा संयम रखिए। अपने परिवार को दु:ख से बचा ले।

आज बहुत अधिक कुछ ना कहते हुए। आज केवल इतना ही कहूंगी कि दुनिया से विदा लेने वालों को संपूर्णा का कोटि-कोटि नमन।

सात्विकता की मूरत वह* *छवि, जिसे देखते रहते थे।
माता की सी चिंता अपने शिशुओं की उन नेत्रों में,
सहज वचन में निहित वही बल जो होता है मंत्रों में।*
ओम शांति शांति शांति*